सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र, वसुन्धरा, फरीदाबाद

प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा

(संगीत प्रवेशिका परीक्षा गायन का पाठ्यक्रम)–

क्रियात्मक परीक्षा – (70 अंक)

1- 7 शुद्ध और विकृत -स्वरों को गाने का अभ्यास

2-अल्हैया बिलावल, यमन, खमाज, और भूपाली रागों में एक -एक ख्याल एवं दो सरल तानें

3- पाँच सरल अलंकारों का अभ्यास (विलम्बित एवं मध्य लय में)

4- दादरा, कहरवा में तीनताल के ठेकों को ताली देते हुए ठाह की लय बोलना।

मौखिक परीक्षा – (30 अंक)

निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा एवं उनका ज्ञान -

ध्वनि, नाद, स्वर, चल, अचल स्वर, शुद्ध एवं विकृत स्वर,आरोह, अवरोह, वादी, समवादी,लय, मात्रा, ताली सम एव आवर्तन।

S.D.S.K.K.

सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र, वसुन्धरा, फरीदाबाद

प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा

(संगीत प्रथम वर्ष गायन का पाठ्यक्रम)–

क्रियात्मक परीक्षा - 100 अंकों की । शास्त्र का एक प्रश्न पत्र - 50 अंकों का।

क्रियात्मक -

1 स्वर ज्ञान - 7 शुद्ध और 5 विकृत स्वरों को गाने और पहचानने का ज्ञान, अधिकतर, दो- दो स्वरों के सरल समूहों को गाने और पहचानने का अभ्यास, शुद्ध स्वरों का विशेष ज्ञान।

2 लय ज्ञान - प्रत्येक मात्रा पर ताली देकर लय की स्थिरता की जाँच।

विलम्बित, मध्य और द्रुत लयों का साधारण परिचय। विभिन्न सरल मात्रा, विभागों की शिक्षा जैसे एक मात्रा में आधी - आधी मात्रा के दो अंक (एक,दो) या दो स्वर (सा,रे) बोलते हुए ताली देना। एक मात्रा में चौथाई - चौथाई मात्रा के चार अंक (एक, दो, तीन ,चार) या चार स्वर(सा रे ग म) बोलना। 3 दस सरल अलंकारों का समुचित अभ्यास सरगम और आकार दोनों में एवं विलम्बित तथा मध्य - लयों में।

4 अल्हैया - बिलावल, यमन, खमाज, काफी बिहाग भैरव और भूपाली रागों में एक-एक छोटा ख्याल कुछ सरल तानों सहित।

5 इन रागों में साधारण आलाप करने की क्षमता। गीत गाते समय हाथ से ताल देने का अभ्यास तथा तबले के साथ गाने का अभ्यास।

6 तीनताल, चारताल, दादरा और कहरवा तालों के ठेकों को ताली देते हुए ठाह तथा दुगुन लयों में बोलना।

7 मुख्य राग-दर्शक आलापों द्वारा राग पहचान।

शास्त्र - (Written Theory Exam)

1 निम्नलिखित सरल विषयों तथा पारिभाषिक शब्दों का साधारण प्रारम्भिक ज्ञान -

संगीत भारत की दो मुख्य संगीत पद्धतियाँ, ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, नाद-स्थान, श्रुति, स्वर, प्राकृत स्वर, अचल और चल स्वर, शुद्ध और विकृत स्वर, सप्तक , थाट, राग, वर्ण, अलंकार, राग जाति,

वादी -सम्वादी,अनुवादी, वर्जित स्वर, पकड़ आलाप-तान,ख्याल, सरगम, स्थाई,अन्तरा, लय (विलम्बित, मध्य और द्रुत) मात्रा, ताल विभाग, ताली, खाली, ठेका, आवर्तन, ठाह तथा दुगुन।

2 इस वर्ष के रागों का परिचय उसके थाट, स्वर, आरोह, अवरोह, पकड़, वादी, सम्वादी, वर्जित स्वर, सम्य तथा कुछ सरल आलापों सहित लिखना।

3 इस वर्ष के तालों के ठेके उनकी मात्रा, विभाग, सम, ताली, खाली सहित ताल लिपि में लिखना। उनका दुगुना लिखने का भी अभ्यास।

4 विष्णु दिगम्बर अथवा भातखण्डे स्वर लिपि पद्धति में से किसी एक पद्धति का प्रारम्भिक ज्ञान।

5 लिखित स्वर-समूहों द्वारा राग की पहचान।

6 विष्णु दिगम्बर तथा भातखण्डे जी की संक्षिप्त जीवनियाँ तथा उनके कार्यों का संक्षिप्त परिचय।

S.D.S.K.K.

सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र, वसुन्धरा, फरीदाबाद

प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा

(संगीत द्वितीय वर्ष गायन का पाठ्यक्रम)–

क्रियात्मक परीक्षा -100 अंकों की। शास्त्र का एक प्रश्न पत्र - 50 अंकों का।

क्रियात्मक -

1 स्वर ज्ञान - शुद्ध, कोमल और तीव्र स्वरों को गाने तथा पहचानने का ज्ञान। प्रथम वर्ष की अपेक्षा कठिन समूहों को गाने और पहचानने का अभ्यास।

2 लय ज्ञान - ठाह दुगुन और चौगुन लयों को ताली अंकों अथवा स्वरों की सहायता से दिखाना।

3 प्रथम वर्ष की अपेक्षा कुछ कठिन अन्य अलंकारों को विलम्बित तथा मध्य - लयों में सरगम और आकार में गाने का अभ्यास।

4 बागेश्री, दुर्गा, आसावरी, भैरवी, वृन्दावनी सारंग, भीमपलासी और देश रागों में मध्यलय के छोटे-ख्याल साधारण तालों सहित गाने का अभ्यास।

5 पाठ्यक्रम के किन्हीं दो रागों में ध्रुपद। प्रत्येक ध्रुपद की स्थाई और अन्तरे को दुगुन और चौगुन लय में गाने का अभ्यास।

6 यमन, बिहाग और अल्हैया-बिलावल में से एक एक विलम्बित-ख्याल स्वर विस्तार तथा तालों सहित गाने का अभ्यास।

7 छोटे ख्यालों में अपने मन से आलाप और सरल तान लेकर तबले से मिलाना।

8 एकताल,रूपक,तीवरा,झपताल और सूलतालों को ठाह, दुगुन और चौगुन लयों में ताली देकर बोलना।

7 राग पहचान।

शास्त्र -

1 निम्नलिखित सरल विषयों तथा पारिभाषिक शब्दों का साधारण प्रारम्भिक ज्ञान -

ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, कम्पन्न, आन्दोलन(नियमित-अनियमित, स्थिर - अस्थिर आन्दोलन), आन्दोलन संख्या नाद की तीन विशेषताएं, नाद की उच्च-नीचता का आन्दोलन संख्या से संबन्ध, नाद

S.D.S.K.K.

और श्रुति, गीत के प्रकार,बड़ा ख्याल, ध्रुपद तथा लक्षण गीत के अवयव(स्थाई,अन्तरा, संचारी, आभोग) जनकथाट, जन्यराग, आश्रयराग,ग्रह, अंश, न्यास, वक्र स्वर, समय और सप्तक का पूर्वांग-उत्तरांग वादी स्वर का राग के समय से सम्बन्ध, पूर्व उत्तर राग और सप्तक का पूर्वांग-उत्तरांग, वादी स्वर का राग के समय से सम्बन्ध, पूर्व - उत्तर राग, तिगुन , चौगुन, मींड, कण, स्पर्श-स्वर तथा वक्र स्वर।

2 प्रथम वर्ष के रागों का पूर्ण परिचय एवं उनको थाट, स्वर, आरोह, अवरोह, जाति, पकड़, वादी, सम्वादी, वर्जित स्वर और आलाप तान सहित स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास।

3 दोनों वर्ष के तालों के ठेकों की मात्रा, ताली, खाली,सम, विभाग आदि लिखते हुए दुगुन तथा चौगुन लयों की ताल लिपि में लिखना।

4 गीतों को विष्णु दिगम्बर अथवा भातखण्डे स्वर लिपि पद्धति में लिखने का ज्ञान।

5 लिखित स्वर-समूहों द्वारा राग की पहचान।

6 मिलते-जुलते रागों मे समता - विभिन्नता बताना।

7 तानसेन तथा अमीर खुसरो की संक्षिप्त जीवनी और उनके संगीत कार्यों का परिचय।

S.D.S.K.K.

सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र, वसुन्धरा, फरीदाबाद

प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा

(संगीत तृतीय वर्ष गायन का पाठ्यक्रम) -

क्रियात्मक परीक्षा - 100 अंकों की । शास्त्र का एक प्रश्न पत्र - 50 अंकों का।

क्रियात्मक -

1 स्वर ज्ञान में विशेष उन्नति, तीनों सप्तकों के शुद्ध और विकृत स्वरों का समुचित अभ्यास, कठिन स्वर समूहों को गाना और पहचानना।

2 अलंकारों को ठाह, दुगुन और चौगुन लयों में गाने का विशेष अभ्यास।

3 तानपूरा मिलाने का ढंग जानना।

4 लय ज्ञान में विशेष उन्नति, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों का अधिक स्पष्ट और पक्का ज्ञान, आड़लय का केवल प्रारम्भिक परिचय।

5 गले से कण- स्वरों के प्रयोग का अभ्यास, कुछ विशेष आलंकारिक स्वर समूहों अथवा खटकों का अभ्यास।

6 तिलक-कामोद, हमीर, केदार, तिलंग, कालिंगड़ा, पटदीप, जौनपुरी, मालकौंश, और पीलू में एक-एक छोटा- ख्याल आलाप, तान तथा बोल- तान सहित।

7 बागेश्री, आसावरी, वृन्दावनी सारंग, भीमपलासी, देश, जौनपुरी, हमीर, केदार, पटदीप, तथा मालकौंश इन 10 रागों में से किन्हीं 6 रागों में बड़ा ख्याल आलाप- बोल तान इत्यादि सहित।

8 उक्त रागों में से किन्हीं दो रागों में एक-एक ध्रुपद तथा किसी एक राग में एक धमार-दुगुन , तिगुन तथा चौगुन सहित।

9 दीपचन्दी, झूमरा, धमार और तिलवाड़ा- तालों के ठेकों को ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयों में बोलना।

10 राग पहचान में निपुणता।

शास्त्र -

S.D.S.K.K.

1 तानपूरे और तबले का पूर्ण विवरण और उनको मिलाने का पूर्ण ज्ञान आन्दोलन की चौड़ाई और उसका नाद के छोटे-बड़ेपन से सम्बन्ध, 22 श्रुतियों का सात शुद्ध-स्वरों में विभाजन(आधुनिक मत), प्रथम और द्वितीय वर्ष के कुल पारिभाषिक शब्दों का अधिक पूर्ण और स्पष्ट परिभाषा, थाट और राग के विशेष नियम, श्रुति और नाद में सूक्ष्म भेद व्यंकेटमुखी के 72 थाटों की गणितानुसार रचना और एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति, स्वर और समय के अनुसार रागों के तीन वर्ग(रे-ध कोमल वाले राग, रे-ध शुद्ध वाले राग और ग-नी कोमल वाले राग), सन्धि प्रकाश राग, गायकों के गुण-अवगुण तानों के प्रकार(शुद्ध या सरल,कूट, मिश्र, बोल-तान), गमक, आड़, स्थाई। गीत के प्रकार-बड़ा ख्याल, धमार(होरी, टप्पा का विस्तृत ज्ञान।

2 पाठ्यक्रम के रागों का पूर्ण परिचय, स्वर-विस्तार तथा तान सहित।

3 इस वर्ष तथा पिछले वर्ष के सभी तालों का पूर्ण परिचय एवं उनके ठेकों की दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयों की ताल लिपि में लिखना किसी ताल या गीत की दुगुन आदि आरम्भ करने के स्थान को गणित द्वारा निकालने की रीति।

4 गीतों की स्व-लिपि लिखना। धमार तथा ध्रुपद को दुगुन,तिगुन तथा चौगुन में लिखना।

5 कठिन स्वर-समूहों द्वारा राग की पहचान।

6 पाठ्यक्रम के समप्रकृति रागों की तुलना।

7 भातखण्डे तथा विष्णुदिगम्बर स्वर-लिपि पद्धतियों का पूर्ण ज्ञान।

8 शारंगदेव तथा स्वामी हरिदास की संक्षिप्त जीवनियाँ तथा उनके संगीत कार्यों का परिचय।

S.D.S.K.K.

(संगीत चतुर्थ वर्ष गायन का पाठ्यक्रम)–(सीनियर डिप्लोमा)

क्रियात्मक परीक्षा-100 अंकों की। शास्त्र का एक प्रश्न पत्र-50 अंकों का। पिछले वर्षों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक -

1 स्वर ज्ञान का विशेष अभ्यास, कठिन स्वर समूहों की पहचान।

2 तानपूरा तथा तबला मिलाने की विशेष क्षमता।

3 अंकों तथा स्वरों के सहारे ताल देकर निम्नलिखित लयों का प्रदर्शन- दुगुन(1 मात्रा में दो मात्रा बोलना), तिगुन(1 में 3), चौगुन(1 में 4), आड़(2 में 3), आड़ का उल्टा(3 में 2), पौनगुन(4 में 3), तथा सवागुन(4में 5) मात्राओं का प्रदर्शन।

4 कठिन और सुन्दर आलाप और तानों का अभ्यास।

5 देशकार, शंकरा, जयजयवन्ती, कामोद, मारवा, मुल्तानी, सोहनी, बहार तथा पूर्वी रागों में एक- एक विलम्बित और द्रुत ख्याल सुन्दर तथा कठिन आलाप, तान तथा बोल- तान सहित।

6 उपरोक्त रागों में से किन्हीं दो में एक-एक ध्रुपद तथा अन्य किन्हीं दो में एक-एक धमार-ठाह, दुगुन , तिगुन तथा चौगुन सहित। किसी एक राग में तराना।

7 ख्याल गायकी में विशेष प्रवीणता।

8 ठुमरी और टप्पा ठेकों का साधारण ज्ञान। आड़ा चारताल तथा जत ताल को पूर्ण रूप से बोलने का अभ्यास।

9 स्वर समूहों द्वारा राग पहचानना।

10 गाकर रागों में समता- विभिन्नता दिखाना।

शास्त्र -

1- गीत के प्रकार(टप्पा, ठुमरी और तराना, तिरवट, चतुरंग, भजन,गीत तथा ग़ज़ल का विस्तृत वर्णन। राग- रागिनी पद्धति आधुनिक आलाप गायन की विधि, तान के विविध प्रकारों का

वर्णन,विवादी स्वर का प्रयोग, निबद्ध गान के प्राचीन प्रकार(प्रबन्ध, वस्तु, आदि) धातु, अनिबद्ध-गान, अध्व-दर्शक स्वर।

2- 22 श्रुतियों का स्वरों में विभाजन(आधुनिक और प्राचीन मतों का तुलनात्मक अध्ययन), लिखे हुए तार की लम्बाई का नाद के ऊँचे-नीचेपन से सम्बन्ध।

3- छायालग और संकीर्ण राग, परमेल -प्रवेशक राग, रागों का समय- चक्र, राग का समय निश्चित करने में अध्वदर्शक-स्वर, वादी-सम्वादी और पूर्वांग- उत्तरांग का महत्व, दक्षिण और उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धतियों के स्वरों की तुलना।

4- उत्तर भारतीय सप्तक के स्वरों से 32 थाटों की रचना, आधुनिक-थाटों के प्राचीन नाम, तिरोभाव-आविर्भाव, अल्पत्व-बहुत्व।

5- रागों का सूक्ष्म तुलनात्मक अध्ययन तथा राग पहचान।

6- विष्णु दिगम्बर तथा भातखण्डे दोनों स्वर-लिपियों का तुलनात्मक अध्ययन। गीतों को दोनों स्वर-लिपियों में लिखने का अभ्यास। धमार और ध्रुपद की दुगुन , तिगुन और चौगुन स्वरलिपि में लिखने का पूर्ण अभ्यास।

7- भरत, अहोबल , व्येंकेटमुखी तथा मानसिंह तौमर, का जीवन चरित्र, तथा इनके संगीत कार्यों का विवरण।

8- पाठ्यक्रम के सभी तालों की दुगुन, तिगुन तथा चौगुन प्रारम्भ करने का स्थान गणित द्वारा निकालने की विधि। दुगुन, तिगुन तथा चौगुन के अतिरिक्त अन्य विभिन्न लयकारियों को ताल-लिपि में लिखने का अभ्यास।

S.D.S.K.

सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र, वसुन्धरा, फरीदाबाद

प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा

(संगीत पंचम वर्ष गायन का पाठ्यक्रम) -

क्रियात्मक परीक्षा - 100 अंकों की । शास्त्र का एक प्रश्न पत्र - 50 अंकों का। पिछले वर्षों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक -

1 कुछ कठिन लयकारियों को ताली देकर दिखाना- जैसे 2 मात्रा में 3 मात्रा बोलना और 3 मात्रा में 4 मात्रा बोलना इत्यादि।

2 नोम-तोम के आलाप का विशेष अभ्यास।

3 पूरिया, गौड़-मल्हार, छायानट, श्री, हिंडोल, गौड़-सारंग, विभास, दरबारी-कान्हड़ा, तोड़ी, अड़ाना, इन रागों में एक-एक विलम्बित ख्याल तथा द्रुत ख्याल पूर्णतया सुन्दर गायकी के साथ। किसी दो रागों में एक- एक धमार और किसी दो में एक- एक ध्रुपद जिसमें दुन, तिगुन, चौगुन और आड़ करना आवश्यक है।

4 रागों का सूक्ष्म अध्ययन, रागों में आविर्भाव-तिरोभाव का क्रियात्मक प्रयोग।

5 सवारी, गजझम्पा, अद्धा, मत्त, पंजाबी, तालों का पूर्ण-ज्ञान और इन्हें ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयकारियों में ताली देकर बोलना।

6 तीनताल, झपताल, चारताल, एकताल, कहरवा तथा दादरा तालों को तबले पर बजाने का साद्शारण अभ्यास।

शास्त्र -

1 पिछले चतुर्थ वर्ष तक के पाठ्यक्रम का पूर्ण तथा विस्तृत अध्ययन

2 अनिबद्ध-गान के प्राचीन प्रकार-रागालाप, रूपकालाप, अलप्तिगान, स्वस्थान-नियम, बिदारी, राग-लक्षण, जाति-गायन और उसकी विशेषताएं, सन्यास,विन्यास, गायकी, नायकी, गांधर्व, गीत(देशी, मार्गी)। पाठ्यक्रम के रागों में तिरोभाव-आविर्भाव और अल्पत्व-बहुत्व दिखाना।

3 श्रुति-स्वर विभाजन के सम्बन्ध में सम्पूर्ण इतिहास का तीन मुख्य कालों में विभाजन(प्राचीन,मध्य और आधुनिक), इन तीन कालों के ग्रन्थकारों के ग्रन्थ और उनमें वर्णित मतों में साभ्य और भेद।

षडज-पंचम भाव और आन्दोलन संख्या तथा तार की लम्बाई का सम्बन्ध, किसी स्वर की आन्दोलन संख्या दी हुई हो तार की लम्बाई निकालना(जब कि षडज की दोनों वस्तुएं दी हुई हों) इसी प्रकार तार की लम्बाई दी हुई हो तो आन्दोलन संख्या निकालना,मध्य -कालीन पण्डितों और आधुनिक-पण्डितों के शुद्ध और विकृत स्वरों के स्थानों की तुलना उनके तार की लम्बाइयों की सहायता से करना।

4 विभिन्न रागों में सरल तालों के सरगम मन से बनाना।

5 इस वर्ष के रागों का विस्तृत अध्ययन तथा उनसे ,मिलते-जुलते रागों का मिलान, रागों में अल्पत्व-बहुत्व, तिरोभाव-आविर्भाव दिखाना।

6 इस वर्ष के तालों का पूर्ण परिचय तथा उनके ठेकों को विभिन्न लयकारियों में ताललिपि में दिखाना। गणित द्वारा किसी गीत या ताल की दून, तिगुन तथा चौगुन आड़ आदि प्रारम्भ करने का स्थान निश्चित करना।

7 गीत और उनकी दुगुन, तिगुन और चौगुन लयकारियों को स्वर-लिपि लिखना।

8 निबन्ध के विषय जैसे - राग और रस, संगीत और अन्य ललित - कलाएं, संगीत और कल्पना, यवन संस्कृत का हिन्दुस्तानी-संगीत पर प्रभाव, संगीत और उसका भविष्य, संगीत में वाद्यों का स्थान, लोक संगीत इत्यादि।

9 गीतों और तालों को किसी भी स्वर - लिपि में लिखने का अभ्यास।

10 श्रीनिवास, रामामात्य, हृदयनारायण देव, मोहम्मद- रजा, अदारंग का जीवन परिचय तथा संगीत - कार्य।

S.D.S.K.

(संगीत छठा वर्ष गायन का पाठ्यक्रम)-

क्रियात्मक परीक्षा- 300 अंकों की। शास्त्र के 2 प्रश्न पत्र 50-50 अंकों के। पिछले वर्षों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक -

1 राग पहचान में निपुणता। अल्पत्व-बहुत्व। आविर्भाव-तिरोभाव और समता-विभिन्नता दिखाने के लिएपूर्व वर्षों के सभी रागों का प्रयोग हो सकता है। इसलिए सभी का विशेष विस्तृत अध्ययन होना आवश्यक है।

2 गायन की तैयारी, आलाप, तानों में सफाई, महफिल गाने की निपुणता।

3 टप्पा, ठुमरी, तिरवट और चतुरंग गीतों का परिचय, इनमें से किन्हीं दो गीतों को जानना आवश्यक है।

4 रामकली, मिया-मल्हार, परज, वसन्त, रागेश्री, पूरिया धनाश्री, ललित, शुद्ध-कल्याण, देशी और मालगुन्जी में एक - एक बड़ा ख्याल और एक-एक छोटा ख्याल पूर्ण तैयारी के साथ। किन्हीं दो रागों में एक-एक धमार, एक-एक ध्रुपद, और एक-एक तराना जानना आवश्यक है।प्रथम वर्ष से षष्ठ वर्ष तक के रागों में से किसी एक में चतुरंग।

5 काफी, पीलू, पहाड़ी, झिंझोटी, भैरवी, तिलंग तथा खमाज इनमेंक्रं से किन्हीं दो रागों में एक-एक ठुमरी तथा किसी एक राग में टप्पा।

6 लक्ष्मीताल, ब्रह्मताल तथा रुद्रताल इन तीनों तालों का पूर्ण परिचय तथा इनको पिछले वर्ष की उल्लखित सभी लयकारियों में हाथ से ताली देकर दिखाने का अभ्यास।

शास्त्र - (प्रथम प्रश्न पत्र)

1 प्रथम वर्ष से षष्ठ वर्ष तक के सभी रागों विस्तृत तुलनात्मक और सूक्ष्म परिचय। उनमें आलाप। तान आदि स्वर-लिपि में लिखने का पूर्ण अभ्यास,संप्रकृति रागों में समता विभिन्नता दिखाना।

2 विभिन्न रागों में अल्पत्व-बहुत्व, अन्य रागों की छाया दिखाते हुए आलाप, तान स्वर-लिपि में लिखना।

3 कठिन लिखित स्वर- समूहों द्वारा पहचानना।

4 दिये हुए रागों में सरगम बनाना। दी हुई कविता को राग में ताल-बद्ध करने का ज्ञान।

5 गीतों को स्वर-लिपि में लिखना। धमार और ध्रुपद को दुगुन, तिगुन,चौगुन और आड़ आदि लयकारियों में लिखना।

6 तालों के ठेकों को विभिन्न लयकारियों में लिखना।

7 कुछ लेख जैसे - जीवन में संगीत की आवश्यकता, आलाप-विधि, महफिल की गायकी, शास्त्रीय संगीत का जनता पर प्रभाव, रेडियो आव्र सिनेमा-संगीत, पृष्ट संगीत, हिन्दुस्तानी संगीत, और वृन्दवादन, हिन्दुस्तान-संगीत की विशेषताएं, स्वर का लगाव, संगीत और स्वरलिपि इत्यादि।

8 हस्सू खाँ, हद्दू खाँ, फय्याज खाँ, अब्दुल करीम खाँ, बड़े गुलाम अली खाँ, ठाकुर ओंकार नाथ का जीवन परिचय तथा कार्य।

(द्वितीय प्रश्न पत्र)-

1 पिछले सभी वर्षों के शास्त्र सम्बन्धित विषयों का सूक्ष्म तथा विस्तृत अध्ययन।

2 मध्यकालीन तथा आधुनिक संगीतज्ञों के स्वर-स्थानों की आन्दोलन संख्याओं की सहायता से तथा तार की लम्बाई की सहायता से तुलना, पाश्चात्य स्वर-सप्तक की रचना, सरल गणान्तर और शुभ स्वर-संवाद के नियम,पाश्चात्य स्वरों की आन्दोलन संख्याएं। हिन्दुस्तानी स्वरों में स्वर- संवाद, कर्नाटकी ताल पद्धति और हिन्दुस्तानी ताल पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन, संगीत का संक्षिप्त क्रमिक इतिहास,ग्राम, मूर्छना(अर्थ में क्रमिक परिवर्तन), ,मूर्छना और आधुनिक-थाट,कलावन्त, पण्डित, नायक, गायक,वाग्गेयकार, बानी(खण्डार), डागुर, नौहार, गौवरहार), गीति, गति के प्रकार, इत्यादि, गमक के विविध प्रकार हिन्दुस्तानी वाद्यों के विविध प्रकार(तत, वितत, सुषिर, घन और अवनद्ध)।

3 निम्नलिखित विषयों का ज्ञान - तानपूरे में उत्पन्न होने वाले सहायक नाद, पाश्चात्य सच्चा स्वर-सप्तक का समान स्वरान्तर-सप्तक में परिवर्तित होने के कारण और विवरण, मेजर, माइनर और सेमीटोन, पाश्चात्य आधुनिक स्वरों के गुण-दोष, हारमोनियम पर एक आलोचनात्मक दृष्टि, तानपूरे से निकलने वाले स्वरों के साथ हमारे आधुनिक स्वर - स्थानों का मिलान। प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक राग-वर्गीकरण,उनका महत्व और उनके विभिन्न प्रकारों की पारस्परिक तुलना। संगीत कला और शास्त्र का पारस्परिक सम्बन्ध।भरत की श्रुतियाँ समान थी अथवा असमान- इस विभिन्न विद्वानों के विचार और तर्क। सारणा-चतुष्ठई का अध्ययन, उत्तर भारतीय संगीत को संगीत परिजात की देन, हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत पद्धतियों की तुलना -उनके स्वर, ताल और रागों का मिलान

करते हुए। पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का साधारण ज्ञान, संगीत के घरानों का संक्षिप्त ज्ञान, रत्नाकर के दस विधि राग-वर्गीकरण भाषा-विभाषा इत्यादि।

4 भातखण्डे और विष्णु दिगम्बर स्वर लिपि पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन, उनमें त्रुटियाँ और उन्नति के सुझाव।

5 लेख जैसे- भावी संगीत के समुचित निर्माण के लिए सुझाव, हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति के मुख्य सिद्धान्त। प्राचीन और आधुनिक प्रसिद्ध संगीतज्ञों का परिचय तथा उनकी शैली। संगीत कामानव जीवन पर प्रभाव। चित्त और संगीत स्कूलों द्वारा संगीत-शिक्षा की त्रुटियाँ और उन्नति के सुझाव। संगीत और स्वर साधन।

S.D.S.K.K.